International Journal of Professional Development
ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online) Vol.14, No.2, July-Dec 2025

दिनकर रचित "रश्मिरथी" काव्य में कर्ण का चरित्र

डॉ. अमितेश बोकन
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय सेक्टर 14 गुरुग्राम हरियाणा 122001

प्रस्तावना

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी साहित्य के ओजस्वी कवि हैं, जिन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से महाभारत के सबसे चर्चित चरित्र कर्ण को नए सिरे से प्रस्तुत किया है। 'रश्मिरथी' (1952) दिनकर की एक महाकाव्यात्मक रचना है जो सात सर्गों में विभक्त है और जिसमें कर्ण के जीवन, संघर्ष, मूल्यों और त्रासदी को केंद्र में रखकर एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। पारंपरिक महाभारत में जहां कर्ण को अधर्म के पक्षधर के रूप में चित्रित किया गया है, वहीं दिनकर ने कर्ण को एक महानायक के रूप में स्थापित किया है—एक ऐसा नायक जो परिस्थितियों का शिकार होते हुए भी अपने मूल्यों, आदर्शों और प्रतिबद्धता पर अटल रहता है।

रश्मिरथी में कर्ण का चरित्र बहुआयामी है। वह एक साथ दानवीर, कर्मवीर, युद्धवीर, स्वाभिमानी, नीतिज्ञ, परिश्रमी, न्यायप्रिय, तर्कशील, गुरुभक्त, प्रतिबद्ध, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ, आदर्श पुत्र और मित्रनिष्ठ है। दिनकर ने कर्ण का परिचय देते हुए लिखा है –

"जिसके पिता सूर्य थे, माता कुन्ती सती कुमारी,
उसका पलना हुई धार पर बहती हुई पिटारी ।
सूत – वंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्भुत वीर । [1]

दानवीरता: कर्ण की उदारता और त्याग की महागाथा

कर्ण की दानवीरता उसके चरित्र का सबसे प्रसिद्ध और उज्जवल पहलू है। दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण को 'दानवीर' के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जो बिना किसी स्वार्थ के, बिना किसी हिसाब-किताब के दान देता है। कर्ण की दानशीलता केवल भौतिक वस्तुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करता।

रश्मिरथी में सबसे मार्मिक प्रसंग वह है जब इंद्र ब्राह्मण का वेश धारण कर कर्ण से उसके कवच-कुंडल मांगते हैं। कर्ण जानता है कि ये कवच-कुंडल उसके जीवन की रक्षा करते हैं, फिर भी वह बिना किसी संकोच के उन्हें दान कर देता है। कर्ण के बारे में यह प्रसिद्ध था कि सूर्य उपासना के समय कोई अगर उससे दान मांगता है तो वह मना नहीं करता है। जाह्नवी नदी के तट पर जब कर्ण सूर्य उपासना कर रहे थे , उसी समय स्वयं इंद्र उनके कवच और कुंडल को लेने के लिए छलपूर्वक ब्राह्मण का वेश धारण करते हैं। ब्रह्मणवेश धारी इंद्र ने कर्ण से उनके कवच और कुंडल दान देने की बात कही। इतना कहते ही कर्ण को समझ आ गया कि यह तो स्वयं इंद्र है-

समझा, तो यह और न कोई, आप स्वयं सुरपति हैं,
देने को आये प्रसन्न हो तप में, नई प्रगति हैं
धन्य हमारा सुयश आपको खींच मही पर लाया,
स्वर्ग भीख मांगने आज, सच ही, मिट्टी पर आया । [2]

उन्होंने बिना देरी किए हुए अपने कवच और कुंडल इंद्र को दान दे दिए। कर्ण कहता है कि मैं शिवि और दधीचि की परंपरा को छोड़कर इस संसार में दान मांगे जाने पर नहीं देने के लिए अपयश प्राप्त नहीं करना चाहते। दिनकर जी ने लिखा है –

अतः, आपने जो माँगा है, दान वही मैं दूँगा,
शिवि-दधिचि की पंक्ति छोड़कर, जग में अयश न लूँगा।
पर, कहता हूँ, मुझे, बना निस्त्राण छोड़ते हैं क्यों ?
कवच और कुंडल ले करके प्राण छोड़ते हैं क्यों ? [3]

यह पंक्तियां कर्ण की असीम दानशीलता को दर्शाती हैं। कर्ण के लिए दान केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि जीवन का सिद्धांत है। वह अपने स्वाभिमान और सम्मान को किसी भी मूल्य पर दांव पर नहीं लगाना चाहता, लेकिन दान के मामले में वह सब कुछ न्योछावर कर देता है।

कर्ण की दानवीरता में एक विशेष बात यह है कि वह कभी दान देकर किसी को अपना एहसानमंद नहीं बनाता। उसका दान निष्काम है, निस्वार्थ है। वह दान इसलिए देता है क्योंकि यह उसका धर्म है, न कि किसी प्रतिफल की आशा में। यह गुण कर्ण को महाभारत के अन्य पात्रों से अलग और श्रेष्ठ बनाता है।

कर्मवीरता: परिश्रम और संघर्ष का प्रतीक

कर्ण का जीवन संघर्ष की कहानी है। जन्म से ही उसे समाज की उपेक्षा और तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। सूतपुत्र होने के कारण उसे क्षत्रियों की श्रेणी में स्थान नहीं मिलता, लेकिन कर्ण हार नहीं मानता। वह अपनी कर्मशक्ति और पुरुषार्थ से अपना स्थान बनाता है।

दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण के संघर्ष को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है। कर्ण को धनुर्विद्या सीखने के लिए परशुराम के पास जाना पड़ता है और वहां भी उसे अपनी जाति छिपानी पड़ती है। जब परशुराम को सच्चाई का पता चलता है, तो वे कर्ण को शाप दे देते हैं कि युद्ध के सबसे महत्वपूर्ण क्षण में उसकी विद्या काम नहीं आएगी।

इन सभी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कर्ण अपने कर्म पर अटल रहता है। वह जानता है कि समाज उसे स्वीकार नहीं करेगा, फिर भी वह अपनी योग्यता साबित करता रहता है। कर्ण की कर्मवीरता इस बात में निहित है कि वह कभी भाग्य को कोसता नहीं, बल्कि अपने कर्म से भाग्य को बदलने का प्रयास करता है। युद्ध के क्षेत्र में भी वह अपनी कर्मवीरता को प्रदर्शित करता है। दान देते समय भी वह अपने प्राणों की परवाह न करते हुए कवच और कुंडल दान देता है। मित्रता के धर्म की रक्षा के लिए भी वह सदैव तैयार रहता है। रंगभूमि में वह अर्जुन को द्वंद युद्ध के लिए ललकारता हुआ कहता है –

द्वन्द्व-युद्ध के लिए पार्थ को फिर उसने ललकारा,
अर्जुन को चुप ही रहने का गुरु ने किया इशारा ।
कृपाचार्य ने कहा – "सुनो हे वीर युवक अनजान !
भरत – वंश – अवतंस पांडु की अर्जुन है संतान । [4]

अपनी जाति पूछे जाने पर वह स्वाभिमानपूर्वक कहता है कि मेरी जाति मेरी भुज के बल से है-

पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से ,
रवि - समान दीपित ललाट से, और कवच कुंडल से। [5]

यह पंक्तियां कर्ण के कर्मवाद को दर्शाती हैं। कर्ण केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त अन्याय के विरुद्ध भी खड़ा होता है।

युद्धवीरता: महान योद्धा का तेज

कर्ण महाभारत के सबसे महान योद्धाओं में से एक है। उसकी युद्ध कला, धनुर्विद्या और पराक्रम की तुलना केवल अर्जुन से की जा सकती है। दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण की युद्धवीरता का भव्य चित्रण किया है।

कर्ण का युद्ध कौशल केवल शारीरिक बल तक सीमित नहीं है। वह एक रणनीतिकार भी है जो युद्ध की बारीकियों को समझता है। कुरुक्षेत्र के युद्ध में कर्ण अकेले ही पांडवों की सेना को विचलित कर देता है। उसके तीरों की वर्षा से पांडव सेना में हाहाकार मच जाता है।

दिनकर लिखते हैं-

सागर-सा जित, क्षुभित घोर,

विकराल दण्डधर-सा कठोर,
अरिदल पर कुपित कर्ण टूटा,
धनु पर चढ़ महामरण छूटा,
ऐसी पहली ही आग चली,
पाण्डव की सेना भाग चली। [6]

ये पंक्तियां कर्ण की वीरता के भाव को प्रदर्शित करती हैं। युद्ध में वह सूर्य की तरह तेजस्वी है, लेकिन व्यवहार में चंद्रमा की तरह शीतल। उसमें पृथ्वी का धैर्य और सागर की गंभीरता है।

कर्ण की युद्धवीरता में एक विशेष बात यह है कि वह कभी पीठ नहीं दिखाता। चाहे परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हों, कर्ण रणभूमि में डटा रहता है। यह साहस और शौर्य उसे महाभारत का सबसे सम्मानित योद्धा बनाता है। वह कार्तिकेय के समान पांडवों की सेवा पर टूट पड़ता है और युधिष्ठिर को भी युद्ध में हारने के उपरांत उसे जीवन का दान देता है। वह अन्य पांडवों को भी युद्ध में हराता है। अति बलशाली घटोत्कच को भी वह अपनी शक्ति प्रहार से मार देता है। स्वयं कृष्ण कहते हैं कि अर्जुन यदि तुम भी अपने गांडीव को धारण करो और मैं भी अपने सुदर्शन चक्र को धारण करूं तो भी युद्ध भूमि में कर्ण को को रोकना संभव है। यह सब कथन कर्ण की अद्भुत वीरता और पराक्रम का परिचायक है।

स्वाभिमान: आत्मसम्मान की अटूट चट्टान

कर्ण का स्वाभिमान उसके चरित्र का मूल आधार है। सूतपुत्र होने के कारण समाज ने उसे जो अपमान दिया, उसने कर्ण के स्वाभिमान को और दृढ़ बना दिया। वह किसी के सामने झुकता नहीं, किसी से भीख नहीं मांगता।

रश्मिरथी में सबसे महत्वपूर्ण क्षण वह है जब कृष्ण कर्ण को सच्चाई बताते हैं कि वह कुंती का पुत्र है और पांडवों का सबसे बड़ा भाई। कृष्ण उसे पांडवों के साथ आने का आमंत्रण देते हैं, लेकिन कर्ण इनकार कर देता है। वह कहता है कि दुर्योधन ने उसे वह सम्मान दिया जो पांडवों ने कभी नहीं दिया। इस स्वाभिमान के कारण कर्ण अपने प्राण तक न्योछावर कर देता है। रंगभूमि में अर्जुन के साथ द्वंद युद्ध की बात पर जब कृपाचार्य कर्ण से उनकी जाति पूछते हैं तो वह स्वाभिमान पूर्वक प्रति उत्तर देता है –

ऊपर सिर पर कनक-छत्र, भीतर काले के काले,
शरमाते हैं नहीं जगत में जाति पूछनेवाले।
सूतपुत्र हूँ मैं, लेकिन थे पिता पार्थ के कोन ?
साहस हो तो कहो, ग्लानि से रह जाओ मत मौन। [7]

यह पंक्तियां कर्ण के अटूट स्वाभिमान को दर्शाती हैं। वह जानता है कि पांडवों के साथ जाने से उसे राजसी सुख मिलेगा, लेकिन वह अपने मित्र को धोखा नहीं दे सकता।

कर्ण का स्वाभिमान केवल व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि सामाजिक भी है। वह उन सभी उपेक्षितों और वंचितों की आवाज बनता है जिन्हें समाज ने जन्म के आधार पर तिरस्कृत किया है। कर्ण का संघर्ष वर्ग संघर्ष का प्रतीक बन जाता है।

नीतिज्ञता: धर्म और नीति का ज्ञान

कर्ण केवल योद्धा नहीं, बल्कि एक नीतिज्ञ भी है। वह धर्म, नीति और न्याय के सिद्धांतों को गहराई से समझता है। रश्मिरथी में दिनकर ने कर्ण को एक विचारक के रूप में भी प्रस्तुत किया है जो समाज की व्यवस्था पर सवाल उठाता है।

जब कृष्ण कर्ण को समझाते हैं कि दुर्योधन का पक्ष अधर्म का पक्ष है, तो कर्ण अपनी दलीलें देता है। वह कहता है कि जिस समाज ने उसे जन्म के आधार पर अस्वीकार कर दिया, वह समाज किस अधिकार से उससे धर्म की बात करता है? कर्ण की यह तर्कशीलता उसे एक गहरे विचारक के रूप में प्रस्तुत करती है –

हे कृष्ण ! जरा यह भी सुनिए,
सच है कि झूठ, मन में गुनिए।
धूलों में था मैं पड़ा हुआ,
क्रिसका सनेह पा बड़ा हुआ ?
किसने मुझको सम्मान दिया,
नृपता दे महिमावान किया ? [8]

ये पंक्तियां कर्ण के व्यक्तित्व की तर्कशीलता के साथ-साथ उसके नीतिज्ञ होने का भी प्रमाण देती हैं।

कर्ण समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था की आलोचना करता है। वह पूछता है कि क्या व्यक्ति की योग्यता उसके जन्म से निर्धारित होती है? क्या कर्म की जगह जन्म महत्वपूर्ण है? ये प्रश्न कर्ण को एक सामाजिक सुधारक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अर्जुन से युद्ध करते समय अश्वसेन नाम का सर्प कर्ण से निवेदन करता है कि वह उसे अपने धनुष पर संधान करें ताकि वह अर्जुन का वध कर सके। लेकिन नीतिज्ञ कर्ण इसका उत्तर देते हुए कहता है –

राधेय जरा हँसकर बोला,
"रे कुटिल ! बात क्या कहता है ?
जय का समस्त साधन नर का
अपनी बाँहों में रहता है।
उस पर भी साँपों से मिलकर
मैं मनुज मनुज से युद्ध करू ?
जीवन भर जो निष्ठा पाली
उससे आचरण विरुद्ध करू ? [9]

ऐसा कहकर वह अश्वसेन को नीतिपूर्वक युद्ध लड़ने की बात कहकर उसकी बात मानने से इनकार कर देता है।

परिश्रम: अथक प्रयास और साधना

कर्ण के जीवन में जो कुछ भी उपलब्धि है, वह उसके परिश्रम का फल है। उसे कोई विरासत में कुछ नहीं मिला, न राजसी सुख, न सम्मान, न पहचान। जो कुछ भी उसने पाया, वह अपने परिश्रम से पाया। वह तपोवन में आए हुए परशुराम को देखकर विचार करता है की तप से मनुज दिव्य बनता है और शास्त्र से समाज रक्षा होती है-

परशु और तप, ये दोनों वीरों के ही होते शृंगार,
क्लीव न तो तप ही करता है, न तो उठा सकता तलवार।
तप से मनुज दिव्य बनता है, षड् विकार से लड़ता है,
तन की समर-भूमि में लेकिन, काम खड्ग ही करता है। 10

धनुर्विद्या सीखने के लिए कर्ण को झूठ का सहारा लेना पड़ता है। वह परशुराम से विद्या सीखता है, लेकिन उसकी कड़ी तपस्या और साधना को कोई नहीं देखता। जब परशुराम विश्राम कर रहे होते हैं और एक कीड़ा कर्ण की जांघ में दांत गड़ा देता है, तब भी कर्ण अपने गुरु की नींद में बाधा नहीं डालता। यह घटना कर्ण के परिश्रम, समर्पण और गुरुभक्ति को दर्शाती है।

दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण के संघर्ष को बड़ी संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। कर्ण का हर कदम एक संघर्ष है, हर सफलता अथक परिश्रम का परिणाम है।

तर्कशीलता: प्रश्नों का सामना करने वाला योद्धा

कर्ण अंधविश्वासी नहीं है। वह हर बात को तर्क की कसौटी पर कसता है। जब कृष्ण उसे धर्म की बात करते हैं, तो कर्ण पूछता है कि जिस समाज ने उसे अन्याय दिया, वह समाज किस अधिकार से धर्म की बात करता है?

दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण को एक तर्कशील पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। कर्ण कोई काल्पनिक नायक नहीं है, बल्कि एक यथार्थवादी चरित्र है जो समाज की विसंगतियों को समझता है और उन पर सवाल उठाता है।

कर्ण की तर्कशीलता इस बात में भी दिखती है कि वह अपनी स्थिति को स्पष्ट रूप से समझता है। वह जानता है कि दुर्योधन के पास बहुत सी कमियां हैं, लेकिन वह यह भी जानता है कि दुर्योधन ने ही उसे सम्मान दिया है। उसकी तर्कशीलता रंगभूमि में अर्जुन से युद्ध के समय, कृष्ण से संवाद के समय , भीष्म से संवाद के समय तथा अपनी माता से संवाद के समय भी दिखाई देता है।

गुरुभक्ति: आदर्श शिष्य का उदाहरण

कर्ण एक आदर्श शिष्य है। परशुराम से विद्या सीखते समय वह पूर्ण समर्पण से सेवा करता है। जब परशुराम उसकी जांघ पर सिर रखकर सो रहे होते हैं और एक कीड़ा उसकी जांघ में दांत गड़ा देता है, तब भी कर्ण हिलता नहीं ताकि गुरु की नींद में बाधा न पड़े।

यह घटना कर्ण की गुरुभक्ति का सबसे बड़ा उदाहरण है। उसकी यह भक्ति इतनी गहरी है कि वह अपने प्राण तक दांव पर लगा देता है, लेकिन गुरु की सेवा में कोई कमी नहीं आने देता।

हालांकि परशुराम बाद में कर्ण को शाप दे देते हैं, लेकिन कर्ण कभी अपने गुरु के प्रति कोई द्वेष नहीं रखता। वह गुरु के आदेश को शिरोधार्य करता है और अपने भाग्य को स्वीकार करता है। गुरु परशुराम द्वारा शापित होने पर वह कहता है –

परशुराम का शिष्य कर्ण पर, जीवन-दान न माँगेगा,
बड़ी शान्ति के साथ चरण को पकड़ प्राण निज त्यागेगा ।
प्रस्तुत हूँ, दें शाप, किन्तु अन्तिम सुख तो यह पाने दें,
इन्हीं पाद-पद्मों के ऊपर मुझको प्राण गँवाने दें । [11]

प्रतिबद्धता: मित्रता और वचन का पालन

कर्ण की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्रतिबद्धता है। जब दुर्योधन ने उसे सम्मान दिया, तो कर्ण ने उसके प्रति आजीवन वफादार रहने का वचन दिया। यह वचन कर्ण के लिए सर्वोपरि है।

कृष्ण जब कर्ण को सच्चाई बताते हैं और पांडवों के साथ आने को कहते हैं, तो कर्ण इनकार कर देता है। वह कहता है-

है ऋणी कर्ण का रोम-रोम,
" जानते सत्य यह सूर्य – सोम
तन, मन, धन दुर्योधन का है,
यह जीवन दुर्योधन का है।
सुरपुर से भी मुख मोड़ूंगा,
केशव ! मैं उसे न छोड़ूंगा । [12]

यह प्रतिबद्धता कर्ण को महान बनाती है। वह जानता है कि युद्ध में उसकी हार निश्चित है, फिर भी वह अपने वचन से विचलित नहीं होता।

दिनकर ने कर्ण की इस प्रतिबद्धता को त्रासदी के रूप में प्रस्तुत किया है। कर्ण का यह गुण ही उसके विनाश का कारण बनता है, लेकिन यही गुण उसे अमर भी बनाता है।

साहस: भय से परे का जीवन

कर्ण का साहस अद्वितीय है। वह जानता है कि उसके कवच-कुंडल उसकी रक्षा करते हैं, फिर भी वह उन्हें दान कर देता है। वह जानता है कि परशुराम का शाप उसके काम आएगा, फिर भी वह युद्ध से पीछे नहीं हटता।

कुरुक्षेत्र के युद्ध में जब कर्ण का रथ का पहिया जमीन में धंस जाता है और वह निहत्था हो जाता है, तब भी वह भयभीत नहीं होता। वह अर्जुन से धर्म की दुहाई देता है, लेकिन साथ ही युद्ध के लिए तैयार रहता है। वह कहताहै –

"नरोचित धर्म से कुछ काम तो लो,
बहुत खेले, जरा विश्राम तो लो
फँसे रथचक्र को जब तक निकालू,
धनुष धारण करू, प्रहरण सँभालू, [13]

ये पंक्तियां कर्ण के अदम्य साहस को दर्शाती हैं। भले ही वह हार जाए, लेकिन उसका शौर्य अमर है।

कर्तव्यनिष्ठा: धर्म पालन का आदर्श

कर्ण एक कर्तव्यनिष्ठ योद्धा है। वह अपने कर्तव्यों को बखूबी समझता है और उनका पालन करता है। दुर्योधन के प्रति उसकी निष्ठा उसके कर्तव्यबोध का परिणाम है। जिसने उसे सम्मान दिया, उसके प्रति वफादार रहना कर्ण अपना कर्तव्य मानता है। युद्ध में कर्ण अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा से करता है। वह जानता है कि उसका पक्ष हार रहा है, फिर भी वह अंत तक लड़ता रहता है। यह कर्तव्यनिष्ठा कर्ण को एक आदर्श योद्धा बनाती है।

आदर्श पुत्र: माता के प्रति समर्पण

यद्यपि कर्ण को अपनी असली माता कुंती के बारे में बहुत देर से पता चलता है, फिर भी वह एक आदर्श पुत्र है। जब कुंती कर्ण से मिलती है और उसे पांडवों को न मारने का वचन मांगती है, तो कर्ण अपनी माता के सामने नतमस्तक हो जाता है।

कर्ण कुंती को वचन देता है कि वह अर्जुन को छोड़कर किसी अन्य पांडव को नहीं मारेगा। यह वचन देकर कर्ण अपनी जीत के अवसर को खो देता है, लेकिन माता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करता है।

दिनकर ने कर्ण और कुंती के इस संवाद को बड़ी मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। कर्ण की पीड़ा, उसका आक्रोश, और फिर भी माता के प्रति समर्पण—यह सब कर्ण के चरित्र की गहराई को दर्शाता है।

कर्ण: आधुनिक युग का प्रतीक

दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण को केवल एक पौराणिक चरित्र के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक युग के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। कर्ण उन सभी लोगों का प्रतिनिधि है जो समाज में भेदभाव, अन्याय और उपेक्षा का शिकार होते हैं।

कर्ण का संघर्ष वर्ग संघर्ष का प्रतीक है। वह जन्म आधारित सामाजिक व्यवस्था पर सवाल उठाता है और कर्म की प्रधानता को स्थापित करता है। आधुनिक भारत में, जहां सामाजिक समानता और न्याय के लिए संघर्ष जारी है, कर्ण का चरित्र अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

दिनकर ने कर्ण के माध्यम से यह संदेश दिया है कि व्यक्ति की पहचान उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म से होनी चाहिए। कर्ण का जीवन यह सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी विपरीत हों, व्यक्ति को अपने मूल्यों और सिद्धांतों पर अडिग रहना चाहिए।

निष्कर्ष:

रश्मिरथी में दिनकर ने कर्ण को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है। वह केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि एक विचारक, एक समाज सुधारक, और सबसे बढ़कर एक मानवीय चरित्र है। कर्ण की त्रासदी यह है कि उसे समाज ने कभी पूरी तरह स्वीकार नहीं किया, लेकिन उसकी महानता यह है कि उसने कभी हार नहीं मानी।

कर्ण के चरित्र में दानवीरता, कर्मवीरता, युद्धवीरता, स्वाभिमान, नीतिज्ञता, परिश्रम, न्यायप्रियता, तर्कशीलता, गुरुभक्ति, प्रतिबद्धता, साहस, कर्तव्यनिष्ठा, आदर्श पुत्रत्व और मित्रनिष्ठा—ये सभी गुण एक साथ मिलते हैं। यह समन्वय कर्ण को महाभारत का सबसे चर्चित और बहुआयामी चरित्र बनाता है।

दिनकर ने रश्मिरथी में कर्ण को अमर बना दिया है। कर्ण की कहानी केवल एक पौराणिक कथा नहीं रह गई, बल्कि एक सार्वभौमिक संदेश बन गई है—संघर्ष करो, अपने मूल्यों पर अडिग रहो, और अपने कर्म से अपनी पहचान बनाओ।

कर्ण का चरित्र आज भी प्रासंगिक है क्योंकि आज भी समाज में भेदभाव, अन्याय और उपेक्षा मौजूद है। कर्ण उन सभी का प्रतिनिधि है जो इन परिस्थितियों से संघर्ष करते हैं और अपनी जगह बनाते हैं।

दिनकर की रश्मिरथी हिंदी साहित्य की एक अनमोल कृति है जो कर्ण जैसे विवादास्पद चरित्र को एक नए सम्मान के साथ प्रस्तुत करती है। यह महाकाव्य केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का आह्वान है। करण के वध के समय कृष्ण स्वयं उसके चरित्र की अनेक विशेषताओं को लक्षित करते हुए कहते हैं –

मगर, जो हो, मनुज सुवरिष्ठ था वह,
धनुर्धर ही नहीं, धर्मिष्ठ था वह,
तपस्वी सत्यवादी था, व्रती था,
बड़ा ब्रह्मण्य था, मन से यती था । [14]

इसके अतिरिक्त कृष्ण उन्हें निष्कपट हृदय वाला , दलित का उद्धार करने वाला, अद्भुत दानी, करुणामय, आत्म त्यागी , मानवता का कल्याण करने वाला, शत्रु को दया करके प्राण देने वाला तथा मित्रता निभाने वाला कह कर उसकी प्रशंसा करते हैं।

स्पष्ट है रश्मिरथी काव्य में कारण एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रामधारी सिंह दिनकर, रश्मिरथी, पृष्ठ संख्या 2

2. वही, पृष्ठ संख्या 62
3. वही, पृष्ठ संख्या 62
4. वही, पृष्ठ संख्या 4
5. वही, पृष्ठ संख्या 5
6. वही, पृष्ठ संख्या 120
7. वही, पृष्ठ संख्या 4
8. वही, पृष्ठ संख्या 41
9. वही, पृष्ठ संख्या163
10. वही, पृष्ठ संख्या 12
11. वही, पृष्ठ संख्या 21
12. वही, पृष्ठ संख्या 42
13. वही, पृष्ठ संख्या 173
14. वही, पृष्ठ संख्या 184

www.ijpd.co.in